Munmun Choudhary
Asst. Prof.
Department of
Economics,
A. S. College
Bikramganj

B.A. Part - I
Economics Honours
Paper - I
Micro Economics
Topic :- Static and Dynamic Economics

स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र में अंतर
(Distinction between Static and Dynamic Economics)

स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र की परिभाषाओं के आधार पर हम इनके बीच आसानी से अन्तर कर सकते हैं; वास्तव में, इन दोनों के बीच मुख्य अन्तर तिथिकरण (Dating) को लेकर है। इसलिए Prof. Hicks ने कहा है - "मैं आर्थिक सिद्धान्त के उन भागों को आर्थिक स्थैतिकी कहूँगा जिनमें तिथिकरण (Dating) की आवश्यकता नहीं पड़ती और उन भागों को आर्थिक प्रावैगिकी कहूँगा जिनमें प्रत्येक मात्रा का अवश्य ही तिथिकरण (Dating) होना चाहिए।" (I call economic statics those parts of economic theory where we do not trouble ourselves with dating; Economic Dynamic those parts where every quantity must be dated.) इस प्रकार स्थैतिक अर्थशास्त्र में तिथिकरण की आवश्यकता नहीं पड़ती, जबकि प्रावैगिक अर्थशास्त्र में तिथिकरण की आवश्यकता पड़ती है, इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं; किसी फर्म के उत्पादन का अध्ययन करते समय हम स्थैतिक अर्थशास्त्र में केवल आगत (Input) एवं उससे प्राप्त उत्पादन (Output) का अध्ययन करते हैं, इस बात का अध्ययन नहीं करते कि किन-

किन तिथियों पर विभिन्न साधन उत्पादन में लगाए गए तथा किन-किन तिथियों पर उनसे प्राप्त उत्पादन उपभोग के लिए तैयार था। लेकिन प्रावैगिक अर्थशास्त्र में हमारी मुख्य समस्या इन्हीं तिथियों का अध्ययन करना है। साथ ही प्रावैगिक अर्थशास्त्र में हम इन तिथियों में होने वाले परिवर्तनों के आगत-उत्पादन सम्बन्ध (Input - Output relationship) पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन भी करते है।

इस प्रकार स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र के बीच मुख्य अन्तर तिथिकरण को लेकर है। स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र में निम्नलिखित मुख्य अन्तर है—

स्थैतिक अर्थशास्त्र (Static Economics)	प्रावैगिक अर्थशास्त्र (Dynamic Economics)
(1) स्थैतिक अर्थशास्त्र में तिथि-करण (Dating) की कोई आवश्यकता नहीं होती है।	(1) प्रावैगिक अर्थशास्त्र में तिथि करण (Dating) की आवश्यकता होती है।
(2) स्थैतिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध किसी 'समय-बिन्दु' (Point of time) अथवा किसी समय-विशेष की स्थिति से होता है।	(2) प्रावैगिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध समय की अवधि (Period of time) से होती है।
(3) स्थैतिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध परिवर्तनों से नहीं होता क्योंकि इसके अन्तर्गत	

Scanned by TapScanner

जनसंख्या, रुचि, साधन एवं तकनीक में समय के साथ परिवर्तन नहीं होता। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि स्थैतिक संतुलन से हमारा तात्पर्य विश्राम की अवस्था से है, वरन् यह वह स्थिति है जिसमें निरन्तर कार्य चलते रहता है लेकिन जिसमें न तो वृद्धि होती है और न कमी। इसी सक्रिय लेकिन अपरिवर्तनशील प्रक्रिया को स्थैतिक अर्थशास्त्र कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, इसके अन्तर्गत होने वाले परिवर्तन महत्वपूर्ण नहीं होते क्योंकि वे नियमित एवं शांतिपूर्ण होते हैं जिनमें सामान्य सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(4) स्थैतिक अर्थशास्त्र वैसी अर्थव्यवस्था का अध्ययन है जिसमें उत्पादन की दर (Rate of Output) में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(5) स्थैतिक अर्थशास्त्र वैसी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करता है जिसमें नियमितता एवं निश्चितता (Regularity and certainty) होती है।

(3) प्रावैगिक अर्थशास्त्र में परिवर्तनों (changes) का बहुत ही महत्व होता है। इसका सम्बन्ध मुख्यतः निरन्तर परिवर्तनों के प्रभावों तथा निर्धारित किये जाने वाले मूल्यों में परिवर्तन की दर से है। वास्तव में प्रावैगिक वह है जिसमें परिवर्तन नहीं होता। प्रावैगिक अर्थव्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों का सम्बन्ध मुख्यतः जनसंख्या, पूँजी, उत्पादन की तकनीक, औद्योगिक संस्थानों के रूप, उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं इत्यादि से होता है।

(4) प्रावैगिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन है जिसमें उत्पादन की दर (Rate of Output) में सदा परिवर्तन होते रहता है।

(5) प्रावैगिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध वैसी अर्थव्यवस्था से है जिसकी मुख्य विशेषता अनिश्चितता (Uncertainty) होती है।

Scanned by TapScanner

(6) स्थैतिक अर्थशास्त्र का सम्बन्ध आर्थिक घटनाओं से सम्बन्धित भविष्यवाणी से नहीं होना।

(7) स्थैतिक अर्थशास्त्र में अनुमानों (Expectations) की कोई भूमिका होती।

(8) स्थैतिक अर्थशास्त्र में हम संतुलन की अंतिम स्थिति (Final Position of equilibrium) का निर्धारण करते है।

(6) प्रावैगिक अर्थशास्त्र में भविष्यवाणी करना (Prediction) है यानी आनेवाली घटना का विगत घटनाओं से सम्बन्ध स्थापित करना है।

(7) प्रावैगिक अर्थशास्त्र में अनुमानों (Expectations) की की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि आर्थिक विश्लेषणों में गतिशीलता (Dynamism) लाने के लिये अनुमानों की आवश्यकता होती है।

(8) दूसरी ओर प्रावैगिक अर्थशास्त्र में हम विभिन्न समय-बिन्दुओं में संतुलन की विभिन्न अवस्थाओं (various equilibrium positions) का निर्धारण करते है।

Scanned by TapScanner